

श्रीगणेशाय नमः

18 नवशक्तिः

आश्वायुष्यप्रवृत्तिः

आश्वायुष्यः २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

सुलाप्रकाशितिरुवैरुहरोसुमाणांशं दामताविलयभाचुषादिउरुसं गेयोमनामतातविवलोकयतांतरेतत्तु।
 १७७ उर्वत्तवत्तस्य दत्तं तद्वै विरीलं सुपंत्यैव विविं ताभुतल्लभं शब्दोः। दीर्घं चरुं तत्तवैव च नाकं भागां वर्यं च वि
 प्रकटितेव तया तस्यैष्टं १७८।
 विहै कृणासकं नष्टिभारतां
 दारुदो नत्तातं तस्य भग
 कथुद्वारं सुनासितं दं दं
 दं नादिवापभातिवदोदव १७९।
 उहत्तस्य तां तं चैरुवनी १८०।
 स्तोभादिशादिभुनाति तैलो के विरुं तितो।
 शादिवातातयो नागादो न



मन्त्रोवासा तः प्रलियोवकर

नायतायतकाकाकाका लतंते। अनन्ता सिंतयंते। शांतिना १४ यत्परायते। ते वा नित्यातिथि
कानां यो गते सव आश्विनं ५ ये चान्नैवता त क्वा य ऊं ते स चया विता ३ ते पि हामे व को० ते य य ऊं
मविधि पूर्व के०

तिते। यांतिरेवे
याकिनोपिडा
मन्त्राणि प्रयता

५३

वृता रे वानित् बुयांति पितृवृता ३ तुता नियांति तुते
पतं ७५० फील तोयं यो मेत क्वा प्रय क्ति त र दं ० त क्वा प्रय क्ति
कानं ३ य क नो पिय हना सिय ऊं दो ३ य सिय व। यत १४ सिको० ते य
त कु उष्व मा ३ पति ३ ता ३ त क लै ने ३ ० मो च से क म विन्ध नै ३ स न्ना स यो ग ३ क्वा क्वा वि ३ को मा ३ ३

[illegible]

५०

१ श्रीवस्तुलेगद रुल्ल श्रीतनल्ला। केग सुतेग रुल्ल।
 २ श्रीन. म्माव सुवेडिद ने स्रे रुदल्लिको ने त्ता गिबानु।
 ३ श्रीतनल्ला ल श्रीता निति।
 ४ श्रील ब. दीतु के डिल्ला। ब. दीतु के डु।
 ५ श्रीतगे थना को हुने रुल्ल वागि थनन स वागु ड बा।
 ६ श्रीमो वस्तु पना थिन रादु।
 ७ श्रीनान गद ने न रुत य रु दु दे रात्ता गम।
 ८ श्रीवस्तु तने दे विसु रु दे ने रुल्ल वागि तिनु गि व. रा।

१ श्रीदेवनकांठा विदुषात्मागवा १५।
 २ श्रीरोडिकोदवतु जालसादि. सब. यनु सन्देहवेडा।
 श्रीदेवनकोठा ३ श्रीवस्तुतेगद कल्लेडीतने सादि. सा. यविष्णा।
 विदनेलेलो क ४ श्रीनम्र वस्तुना मुवेडिदने रलेरु वल्लदेवानडा।
 शवो। भूडीतमना ५ ललिततर मे लल्लदे विरडा।
 ६ श्रीयाल बलवन्त को यतागि नानडा।
 ७ श्रीतयेथना कोहनेवानडा। सोडलागडा।
 ८ श्रीकोदवस्तुदे ९ म कल्लताइतेगड्डु।
 १० श्रीथनानगर नेरिक्कुडा प्रयासा विठलागडा।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

1

ताम्रपत्रं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥
 यत्ना अथ उपरुक्ते वेदं गोविन्दयोगः ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥
 विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥
 तेऽङ्गं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥
 स्वेति ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥
 ओ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥ अथ विष्णुसूक्तं ॥

मवनेन मे। अस्मिन्नादि ३० य० व० य० या० सितव० पा० मवनेन मे। अस्मिन्नादि वि० य० व० य० या०
 क्षिपुर्वि० द्वा० म० प० म० द्वा० पा० म० वनेन मे। दे० वा० ता० स० स० त० कृ० म० त० य० स० म० न० थो०। आप० पा०
 तावनेन ने० वि० त० व० य० द० तु० मे० प्रति० म० य० ता० प्रति० म० क्षा० मि०। अ० य० म० अ० य० म० य० म० य०
 प्रति० म० य० ता० प्रति० म० क्षा० मि०। आव० म० नी० य० म० म० म० नी० य० म० म० नी० य० म० प्रति० म० य० ता०
 प्रति० म० क्षा० मि०। अ० म० तो० प० स० ता० मि० स० रे० वा० म० मि० त० स० त्वा० र० कृ० सा० प्रति० मे०। अ० पु० न० को०
 म० पु० न० को० म० पु० न० को० प्रति० म० य० ता० प्रति० म० क्षा० मि०। दे० व० रा० ता० स० व० तु० व० स० ने० स्व० नो० व० दि० ता० पु० न० को०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

क दि रा तु० म दा वा दो का मा त्रु प० उ ना स ३०। ४५॥ — ५५ वि० ३० त ह ति ति सी म न्ना दा ता न ते रा त रा
 द स्था० स० दि ता या० वै य्ग रा का० सी ती ञ्ग प व णि त ग व जी ता रु प नि ष ह्य प न व ञ्ग वि ञा या० यो
 म रा स्ते सी क ञ्ग ३ न स० बा० के क म वि ञ्ग यो गो ना म त ती यो ञ्ग य ३॥ — ५५ सी क ञ्ग प ण
 म स्तु॥ — ५ ते यो ग० ञ्गो ञ्ग वा न द
 म का य० वि व ॥ ३ म० वि व स्य त् १॥ ५ व० ५३० ५ ना ञ्ग
 पृ मि ३० ना ञ्ग यो वि उ० स का ले ने द म द ता यो गो न सः ५३० त ५७। स प वा
 य म्म या ते य यो गः षो कः ५ ना त न ४। तै षो सि मे स सा वे ति न द स्था० यो त उ त म० ३। अ ञ्ग न उ वा
 व॥ अ प न० त व तो ञ्ग प न० ञ्ग वि व स्य त ४। क ष मे त वि ञ्ग नी या त्व मा नौ षो क वा नि ति। ५।

[illegible]

[illegible]

कां तौ तौ सार्क वं ३५ यो निमित्त काला पापये के वी सव का मं ३ पौ स नो स्तुः पा वं व सु सार
 लांगलं गवितर्हिना। आरदा ता न क मा मुं ठा दे वी यो ने स्व नी निवा श न या का त स खिलं क ग ह र्था
 ४८ व न कं ग मं ३५ मां यः पु न ये त क मा स वा हो ति य न य न ३५ थो ते य ३ मं नि लं
 न क रं ला व पु स्त वं तं ला प नि य ने के वी प ति ० प्र य मि वां ग ना। रा कं त नी की
 ला व पी नी लो त ल वि लो क ना। गं ती न ना ति स्त व ली वि नु पि त त नु ३ नी। सु क
 क र स मो हं ग ३ त पी न प न स्त नी। मु स री ली मु सैः पु र्ण क स लं क स लाल य। पु ष प ल व
 मु ला पि च र ला ह ३ रा क स ० य ०। का म्मा द ० रा न सै य क ० क त म ल ३ न प न ० का मु कं म र्प ३
 न क्कां ति वि त ती प न मे र व नी। रा कं त नी रा ता स्ती रा सै व ३ मी व की ति ता ३ मा गौ नी स ती व ३

वपाभा कुरुया हस्तैव स तैवीरिक्तयेरुतं नविशतु योना स पदैरेवीं पुनयेह्यु सा साहितः प्रय
 तः प्रा कलिः प्र सुः प्र प्रा म्मा नो प्प मात्मनि। सुमिर्क ताव ये श्रीरां मंडिकांत वीयो तवे दा ए वं यः
 पुनयेत क्का प्र ता स० प न से ख नी० तु ह्मा तो गा न्मा या का स० देवी सा य म्मा सा नु या रा यो न
 पुनयेत नि त्मं मिडिकांत के व ह्मा ला० ल र्ही क्का स म पु न्मा नि नि र्म स त
 स की ख नी० य र्मा ल पु न्मा य तु पा ल र्ही व लो क स नै ख नी० य चो ह्मा वि था वे
 न मंडिकां सु स सा प्र स र्गा॥ प्र स र्मि र्मा कं डे य पु न्मा मो सु र्थ र्गा व नि के म वं त ने
 सी दे वी स मा ल्मे वै क्ता क न्मा र्मा स प न्मा य र्मा यः॥ म न्मा पु न्मा य॥ ॥
 तं ता त म व दी वा स या त वि च वि वं य मा र्मा र्मा पु न्मा य र्मा ता व र्ही क्का य म्मा

गलयः कनकोदकाकारिरूपः कृतककनकापत्रः रेवी कनकागतातुजा कनकोदकमलम्
 माला कसला कुरावासा वैभनल कदाय पुतुना भइ दिना को मलालरुहीः सारा पुतुना
 कासा बाः याने कान्तिका बास रेवी प्रो हाम यो वप्याः तस्मात् स्वतुल्यं वस्त्रा
 मसुप्रसक्ति या पत्रा नक्तं वसन कवामि न कसो वी वतु वप्याः
 नेकयुधा नक्ता नेका नक्तं वसन कवामि न कसो वी वतु वप्याः
 स्वा बा नक्त कति का पति वा नी वा नक्तो रेवी नक्तं तने नक्तं वस्त्रं न व विसालासा
 सुमे उयुग बरं स गी। शीर्षलां वा वतु पुलो तावती वसनो नक्तो नक्तं वस्त्रं न व विसालासा

त कभी ये न पुकिता स क ग त त तः । पु क ये ग ग तां धा वीं य १३ कां त क व रूप ला । अ ध्या त्रि त न लं
 का ने कं य पु ने स्त घा रु तैः । पु वै की ये स नै वे ये दा ना त रु स स न्वि तैः । न पि ना के न व लि ना मां से
 न स न या स दा । प्र ष्ठा मा य क नी या त्तां वं १ ने न स ग पि ना । स क पु ने स तां यु ले त कि ता व
 स अ वि तैः । वा स ता गे ग तो रे वा स्तिं ग री यं म आ स नं । पु क ये म पि नं ये न प्रा प्ता
 य क सी रा या । स सि णे पु न त र्क्ष्णं दं स म यं थ म सी ख नं । वा रु नं पु क ये
 ते का थ तं ये ने म ना य नं । त तं कृ तां क लि तु ला स्तु वी त य नि तै नि मेः
 ए के न वा स थ मे न नै के ने त न यो पि दा । य नि ता थं न य क पे न प १ छि द स वा नु या दा । स्तो त्र मं
 तै स्तु वी तै नां थ कि क ग र वि कां । प्र ष्ठा न स र्का ना क क ला सु र्भि कृ तां क लिः । क मा
 प ये क ग ग था वीं मु रु मु रु न नं कि तः । प्र ति लो कं स रु रु या त्ता य स नं न लं स

४२ बल्यं विनिस्त्रयनया मं ॥ ३३ गौथो वरसि ॥ वा मे लस्मा रूपा के राः पुनतो देवता वयः ॥ असा ३ रा
 तु का स ॥ ५६ वा मे वा स्या ३ रा न ना ॥ ३३ गो स तु का ल स्त्री मं कृती ति स्य स र्य ये रा पु कृति न तः ३
 माः अस्ति तो अस्तै न वाः ॥ असा ३ रा तु का वै पा य रा पु मा न ना य प ३ रा न ना वा स तु का ॥ अस्ति तो
 तयो स्त ॥ ५॥ काल मत्तु व रा ॥ पु मा स कृति स प्र रा ॥ तये ॥ य रा वा स तु का पु मा
 रा ॥ ता रा न वि बर्दि ॥ ५॥ न वा स्या रा कृ यः ॥ पु मा स्त घा ३ वि ॥ ५॥ ना यं को ति व रु ती को
 का ल ना ति सी कृ ती ॥ ५॥ न मे ख नी ॥ ती मा य न क ३ ॥ ती य रा कं त नि रा ता स नी ॥ ता म नी वै
 व रु गि य ए क वी ने य रा कृ यः ॥ न सो दे वा इ ति स्तो वै मं काल स्त्री ॥ स र्य ये रा अ व ता न त या र्मा
 या ॥ स्तो ॥ स मं ता स्तो या स या ॥ असा ३ रा तु का वै पा पु मा म दि पु म दि नी ॥ स अ ल स्त्री म
 आ काली सौ व प्रो का रा न स्व ती ॥ इी ख नी पु मा न ना ना वा ॥ स व लो क मे रु ख नी ॥ म दि पा





श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सपैः॥ व स्वात्ति ते व न आत्ता विरांति ३० साक नाना जित आन का नि को वि विलि आ ३ रा नांत ने ७
 रां ३ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७
 वा मी न व लोक नी ना वि रांति व स्वात्ति ते व न आत्ता विरांति ३० साक नाना जित आन का नि को वि विलि आ ३ रा नांत ने ७
 गा विरांति ना रा य रा म य वे गा ३ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७
 रा म य वे गा ३ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७
 ति ना पु य न ग ह म ३० ता रा रा वो या ३ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७ रा नांत ने ७

४१

स० व्यावीरु० ते त्वा० वि स्थिता सैव सवै ५३५० म दते वरु व ० क्वने त० म दा वा नो वरु बाहु उपा० ॥ व
 दु० न० वरु ३० सा क नान्न० हसालो का प्रकायिता सधा द० ॥ १२५० ५ नत स० रा० ती प्र मने क व ता०
 सा तान न० ॥ त विराल ने त्वा० ह सा दित्वा० प्र का यिता० त ता त्मा थ ति० न वि० त
 निरा म० व वि लो० ३० सा क ना न्ना निव ते छ सा नि ह सै व काला न्न ल स ० नि ता नि वि
 सो न का ने न्न ते न रा म प्र सी ३३ वे स क ग वि वा सा म मी व वा थ त ना स स
 उ ता ॥ सवै स दै वा व नि चाल स० ॥ ४॥ ती म्मो को ता ॥ सु त ७ त स धा सौ स दा स्म री ये न पि यो थ म् -

[illegible]

[illegible]

स्त्रीलिंग
राद

[illegible]

नः सन्निधौ योपा नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु
वन्ती नु पनो नु न स्वना नमी वो नु उमा नु नो तवा या ते दि नु न व सृष्टा दि व

स्मनि स्मिथा

नोषमा मान

पना नमा ते

मी वरां सेयु

तादि पुर्ववत् ततः पु

पता वक्ता सि श क ता दि कु य दि ततो नु उ सो मे ३० ३ तामा मा ह्व त य

दि तां कु य दि ततो वषो ह्य न संप्र ता सि धा घं ति ला नु उ कु तं

व न ति प नि सा व ता कु नः क स द स्यं ते स्व पि वा त

सो के पु त न ये पु री नि प ष मा

पु म व सि तौ द्री नि त सा मा

यं पा त स्य सि तिः स न नः ॥ ३

पता वक्ता सि श क ता दि कु य दि ततो नु उ सो मे ३० ३ तामा मा ह्व त य

दि तां कु य दि ततो वषो ह्य न संप्र ता सि धा घं ति ला नु उ कु तं

दि तां कु य दि ततो वषो ह्य न संप्र ता सि धा घं ति ला नु उ कु तं

इति ब्रह्माचारि मंत्राणां विधिः श्रद्धां कृत्वा मंत्राणां यथाशक्तं स्मृतं स्यात् कृत्वा
नो देहं निसर्गं धोमस्तु मृष्टं वा सत्त्वित्तं पश्चात् पुनर्लोकात्तत्
यदेतत्तत्तं गच्छ वनं कायं निक्षिपे विष्णु मते। पञ्चवक्त्रं वत्तं पुनर्नि
विष्णुनां तं कृतं च ते तत्तत्तं स्थि सं दय नं तत्तत्तं गच्छां
प्रक्षिपेत्तु श्रीं मासि सा सिततः कृत्वा तत्तः कृत्वा त्रिमा
सि सादा नि पावणात्तत्तं सं कलभ विष्णु ना के चित्तं वत्तं
ति मानी षिमाः इत्येतत्तत्तं कृत्वा नोत्तुर्दं क चित्तं सा सत्तं
वि नैः स्मृति वि त्ति रत्तु वा नै य मा यैः पुत वि षु दैः इति कृत्वा मंत्राणां
विधिः श्रद्धां कृत्वा मंत्राणां विधिः श्रद्धां कृत्वा मंत्राणां विधिः श्रद्धां कृत्वा

[illegible]

तादिसमाप्तापस्यादकसमीपेअथवाकसासामानीआर्कविवाद्यःअर्क
 बुद्धावातिगौदनिउज्जालिष्णपीतसुतेपावेक्षवस्वयुमेनात्तायास्मि
 पसमाभायापव० उमेतादिअमुकगतसोत्तादिओधुदेदिकापिकाता
 घञ्जिकवि वाद्यं कविष्णोत० नदिन० पोत ना० दीसाद० क
 १२ विष्णुइता आप्ता० त० कृदाअदोमःअ नृयेस्वादा॥ व
 दसतये स्वादा॥ विवादविपियोकका थस्वादा॥ ३०
 यस्मैल० कामाकासायवय० स० ता० अ० कामदे॥ तमस्म त्र० काम० ३०
 धो० त० प्त० पिव० स्वादा॥ कामाये० व० त० सोव्वादतयः॥ ततः॥ स्थि० कृत्वादि
 अर्कसास० बुद्धावातिराव० वतुषास्मिन्नाविपिन० नदे॥ सास० प्रवादये॥ इत्यने॥

देववनप्रसीधविक्रान्तुमिहामितदं तमाद्यं नदिप्रकानामितवप्रवृत्तिः सीतगदावृत्तकालोस्मिलोक
 कथयकृत्यवृत्तोलोकावृत्तमादुर्गमिदं प्रवृत्तं नृपेतिवानतविष्णुं तिसर्वेयेवस्थिताः प्रत्यनीकेषु
 थाः तस्मात्किं पु
 पुर्वमेव निमि
 तजानमानपि
 तासिनारोरा
 किंतीहीनमस्मत्तातुल्यपदादकृत्वा सगण्यं तीततीतः प्रताप्याः प्रकृतेः स्थानेनृषी

नमोस्तुते सर्वत एव सर्वान्नेन तवी यामिते विक्रमस्त्वं सर्वान्नामो विततो सिराश्च ॥ ५ ॥
 ॥ ४ ॥ सरसेति मत्वा प्रसातं युक्त्वं देकल्लदेयात्तव देसनेति । श्रुत्वा न त्वामदिमानं तदेव मया
 प्रमादात् । तथैव वापि यत्रापरा साधर्मसक्तोऽसि विद्वानरायणासनतोऽङ्गने ॥
 ४८ पकोचवा पश्यत तत्सहस्रं मत्तं तत्तन्मयेत्वा मद्मप्रमेयं । पितृलोक
 स्तं वनावन स्तवमस्तु उच्चस्युत्तुर्गनीया नृनृत्वा मोक्षं तथि । कः कुतोऽगो
 लोकवये अतिमप्रतापतस्मात् । ताम्रपतिथायकायं प्रसादयेत्वा मद्म रानी म् । पितृवैव
 त ।

8 ✓

[illegible]

वपुतं तपामकमकिमताममोमृदु कृ० रा० गव। नितिशनि वै न० रावतुते प्रयः सन्नामेति वा०
 गीत० उवा० ५२४५ ५३० तहा दितिसी मते गव गीता लुपनि पलु बुद्धा विद्याया० सांक्षितोया० योग
 सास्त्रेस्ती कृ० नार्तुन स० वा० मजाता नतेती मपर्वणि विस्वतु ५ रा० रानियोगो नादौ
 काररागेध्या यः ५ ५सी नाम व० त्राय नमः ५ ५सी ५ ५३० मर्तुन कृवा ५ ५
 ५ व० सततयु क्रायेत क्वास्वा० पलु पारितो। येना यन कन मवा कृ० तेषां केयो ग
 वि त्रमा ४०० स्तीतग वानुवावा मया वेरयशनो येम० मित्तव यु क्वा ठ पारिते। सथया पनयो तास्ते

३ शु० व० न० न० कु० व० वी० न० मा० ते० व० घा० मा० न० वि० सु० त० ता० वो० इ० स्त्रा० तु० प० प्यो० न० मी० इ० म्ना० मे० ३० व० वे० त० ती०
 १ प्री० त० म० न० ७ न० र० द्द० त० रे० व० मे० तु० प० मि० ३० ७ प० र० द्द० ५ ५ रा० म्ना० ४ ५ ५ ३ त्म० कु० नि० वा० रु० रे० व० र० द्धो० क्वा० र० ख० क० ३
 ५ ० ३ रा० यि० मा० सा० तु० य० १ मा० खा० रा० यि० मा० सा० न० ती० त० मे० न० तु० वा० पु० न० १ सो० म्ना० व० ७ म० द्वा० म्ना० ।
 १० म० कु० नि० ४ ५ ५ ३ स० म्ना० म्ना० न० व० पु० प० त० व० स० म्ना० ७ न० ना० नि० रा० नी० म० र० म्ना० सा० व० त० ७ सा० वे० ता० १
 प्र० कु० ति० ग० त० १ सी० त० ग० वा० न० वा० न० ५ ५ सु० तु० इ० रा० मि० ३० तु० प० ३ स० दा० न० सि० १ य० म्ना० मा० रे० वा० न०
 प० र० द्द० तु० प० र० द्द० नि० त्म० १ र० नि० का० १ ता० १ ना० द० वे० न० त० प० र० ना० न० ग० ने० न० रे० य० म्ना० य० । रा० क० प० प० वि० थो० ३
 शु० ३ स० वा० न० सि० मा० य० घा० त० क्वा० त्व० न० म्ना० य० रा० क० म्ना० द० मे० व० वि० थो० ३ न० १ का० तु० ३ शु० न० त० वे० न० ५ वे० शु०

कामैसैसैरुतिसाना ४ प्रपणंतेनदेवता ॥ तन्तं निदिममास्याय प्रकृत्या विजेतां स्वजा । योजो
 जायां तृणं त कृ ॥ सय याहि तिमिष्ठितिरुततस्यावलां सथा ॥ तामेव विस्था म्मदं । सतया सय
 या छ कृ सस्या नाथन म्मि दते ७ ॥ पलततेवतत ॥ कामाव म्म जैव विदितो बुद्धितो बुद्धि ॥ तवत
 वत्तलामे ५ सां देवा ॥ देवज मोजा ॥ तिमि त क्काया ॥ तिमो मोपि म्मका
 क्क ॥ तिमि म्मप ब्र ॥ म्म ॥ ते म्मामुचय ॥ १ ॥ तव म्म कान्तो म्ममाका य म्मनुत म्म
 नादं ५ कामा ॥ सवस्ति योगमाया स मावत ॥ सुक्को य ॥ ना तिजा ना तिलोकोमा
 म्म म्मकाया वेराद ॥ स म्मती ना निवर्तमाना नि ना रुना त विष्णो ॥ तितु ता निमि ॥ तु वे ॥ न क सना ३

कृद्देशसमुद्येन इन्द्रो जेतानतः । सर्वं तु तानिरासो हं । सार्गेऽपि पितॄन्तपः । ये वां त्वं तपः
 तं पापं कृन्तानां । पापं कर्मणां । ते इन्द्रो ह निरुक्तीतः । तेष्वां इत्तु वताः । कृन्तानां न तपः
 मोक्षाय । तस्मात्सिन्धुतं तयोः । ते इन्द्रो ह निरुक्तीतः । कृन्तानां न तपः । कर्मणां न तपः ।
 तुतापि । वंश्चां सार्थि यः कृन्तयेत् । इन्द्रो ह निरुक्तीतः । पयसा काले पितृणां । ते इन्द्रो ह निरुक्तीतः ।
 तस्य । इन्द्रो ह निरुक्तीतः । सार्थि यः कृन्तयेत् । इन्द्रो ह निरुक्तीतः । पयसा काले पितृणां । ते इन्द्रो ह निरुक्तीतः ।
 सार्थि यः कृन्तयेत् । इन्द्रो ह निरुक्तीतः । पयसा काले पितृणां । ते इन्द्रो ह निरुक्तीतः ।
 तापं प्रकृतियो गोमन्त्रस्य प्रमोथनाय ४५ — पसीतामवन्नायनमः ४५ — पृष्ठं मरुतः ४५ — ५

ताशयवपिशेना नुलिना स्तातिसयरा वं न देत। वेत वा दः वेत ससः वेत पः वेत तु
 सिपः वेत दतः किं वमस्तु नामानेता निरुक्ता मात। अथ प्रयोगः ११ वं १० ॥ १० ॥
 निम्नमुकणोत्तरा ५ निम्नपुं वं का निम्नमा सुचित वं रा निम्नविना रा छिं ५ वं
 मन्ता विपिं क निम्न इति स क लमा १० ५ माला चैः प्रतिमा नालं क
 १२ ताना दसम ये वेतो प निम्ना सेत। प्रथमां सिन सिद्धितीयां नेत
 योः तृतीयां नामा कु कौ वरु धीना तो प व सीपा ५ योः तृतीयां नेत
 ता तो ना स तैर्प ता रु र्दु ह्यो उ क भा ना ५ व ॥ यमाय सोम ५
 अ न क त १० ॥ १० ॥ क ० य मा म दे ५ मा म ता द इति स ० ता ता ० प्रतिमा सु प तो क मा
 क्का रु ती क्क रु या त त तो विपि न्ना रा वं न देत। सुत का ते त तः १० ॥ १० ॥ क य छिं ० तिक
 को शि क र्ण का ० ॥ १० ॥ पा त स्थित तैल ० वी १० ॥ १० ॥ चो वि क्क द्वा ने। वृद्धा वि सु स दे रो ० ॥ ३

वउमषीतयेततः। मापगुभयवचीदिपियंयादिप्रयच्छति। स्वामिनः०३३
 ओपलनलोमोदिआरुनो० गोपुनान० पठः० सेनकुयाकोपोपरा० तये। अन्त
 ताविस्वगद्योक्ताविधानेनैव। त्विस्थायपत० ततः० श्वा० द्वा० आन० निर्वपण० देव
 ताना० तच्छादुः — ती० यमायभर्मिआयभत्तावे वा० तकायवा।
 शौ० उ० वनाय ३ नीयनीलायपत्रकोष्ठिदे। व को० दनायदि
 तायवित्तु ३ प्रायवैकुमात्तुविधिनासपण० कलीपकेको
 मादुति० दुः ३ नो० अन्तवापि० विष्माप० वक० मते० प० व० न० नितक
 से। ला० स्मादुति० तय० य० आ० क० त० वि० द० व० या० मि० ति० त० तो० नि० द० रा० म० कु० य०
 ३ प० स्मा० ने० वि० पि० स्मा० त० ॥

निति प्राज्ञः स गवि कृति कावक ॥ ५ स्त्री देवदावा ॥ ५ स्व लै न केति न पते स्व ना क्य ० प्रा
 ष्यते त वा द ॥ रु ता नि पु न स्त लि त ० त व त वृ त्त वि प्र ति ष्ठ त स्व त्रु यः ॥ ५ ० प्रा ष्य क क्ते दे वा दि व स
 तः ॥ सा व र्णि को ना षा षा नु त वा नु रि त्त वि प्र ति वै र प्र र य त्र या य स्व व नो स्त तो ति
 वा ० कृ तः ॥ त ० प्र य क्ता मि स ० स्त यै त व शान ० त वि प्र ति ॥ स्त्री षा र्क ०
 देवदावा ५ ५ इति देवा तयो रे दी य चा तिल पित ० व न ० व त्त वा ० त र्क
 ता स यो त क्ता ता त्मा ष ति पु ता ॥ ५ ० दे वा व न ० ल व धा सु न यः ० रु त्रि य र्ज ना ॥ सु यी ष्ठि ग्ग
 स न्ना सा य सा व र्णि त्ति रि ता नु तः ॥ ५ ० शार्क ० दे य पु ना तो क्त ० दे वी षा

४१ पञ्चमस्तु ४२ अथ ४३
 पुनीयतामो ४४
 मे ४५ स्थापिते ४६ तामो ४७
 ४८ लोचनस्तु ४९ तामो ५०
 ५१ तुनापानस्तु ५२ तामो ५३
 ५४ लोचनस्तु ५५ तामो ५६
 ५७ पुनीयतामो ५८ तामो ५९
 ६० लोचनस्तु ६१ तामो ६२
 ६३ पुनीयतामो ६४ तामो ६५
 ६६ लोचनस्तु ६७ तामो ६८
 ६९ पुनीयतामो ७० तामो ७१
 ७२ लोचनस्तु ७३ तामो ७४
 ७५ पुनीयतामो ७६ तामो ७७
 ७८ लोचनस्तु ७९ तामो ८०
 ८१ पुनीयतामो ८२ तामो ८३
 ८४ लोचनस्तु ८५ तामो ८६
 ८७ पुनीयतामो ८८ तामो ८९
 ९० लोचनस्तु ९१ तामो ९२
 ९५ पुनीयतामो ९६ तामो ९७
 ९८ लोचनस्तु ९९ तामो १००

उत्तमभारतारा श्रीराज्यतेपाप० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 विष्णुदेवतासी राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 विष्णुदेवतासी राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 उत्तमभारतारा श्रीराज्यतेपाप० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 विष्णुदेवतासी राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 उत्तमभारतारा श्रीराज्यतेपाप० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 विष्णुदेवतासी राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 उत्तमभारतारा श्रीराज्यतेपाप० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०
 विष्णुदेवतासी राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न० राक्षसी रातुष्टु वा न०

१ अये कोटिगणं तदेतन्मन्त्रो जगतां त्रयं तं कुन्तु पितामहात्म्यं नमस्तस्मै प्रसिद्धं यं
 मातामहं तं तच्छ्रेय विष्णुर्मानदो नमः परिकल्प्य पृथिव्यामेतत्पुनरुत्थायिष्यति कार्त्तिके पक्षे
 कल्प्यास्तं मन्त्रं तेनादाय पात्रं पात्रिणा तस्येतां स्त्रियं दृष्ट्वा तु तोषादृष्टं कथयति। — ५३ तित्तु तस्याधिभ-
 यमिति वाणवीं वीकस्या किञ्चिच्छ्रेय विष्णुश्च तिसृषु गती सु० ३४। सवत्सरां तस्य तस्य दातुं देवता तस्युत्त-
 रस्मिन्त पापपुत्र लदिस्य अनेदिनिगो गन्धर्वमिताग्नि वीकस्या का नमः परिकल्प्य तिसृषु ० ३४ अग्नि-
 देवता नमो देवता पापपुत्र उवदि-गन्धर्वमिताग्नि तवीकस्या वृक्षादित्तु वायुती।
 नमस्तस्मादिनि-गन्धर्वमिति पृथ्वी वीकस्या वृक्षे सो गायती। — ५४ अग्निता का नमो
 नमस्तस्मादिनि-गन्धर्वमिति पृथ्वी वीकस्या वृक्षे सो गायती। अवागदी कृत्वा नमस्तस्मादिनि-
 योऽन्तरेकाकातापिन्दीकरतात्। मातामहात्म्यं का ० ४८ तक्षमाकाता दातुं ३।

मोमत ४५-५४५ कृतज्ञातिरिक्त
कृत्ताकुनिसं वारे मातातानता
नम ४५-५४० सीत गवतुव
० यथाकासासि तवुप
योन्ममकात व
तामविसिथाना
नोदुधिनेववा नदं का

तानरूपपद्यते। सीतगव
सीतागणेदे। तुगतिंता
तनलोकेकम्। य
तुयःसंसिधौकु उव
राववृक्षाति वत
सिधस्तोयातिपतांगतिगतपस्वि
स्माधोगीतवाकु वायोगि

विष्णोः ३ आकाशयेन त्रये ॥ सुतकागे दाहस्त्यादित्यरागां कपोतपवन
 दिवास्त्रिखवतोषु वस्त्रिकपटौ शिवाविष्वक् द्वेतिथौ ॥ १० ॥ कावायराज्ञैस्वनाशराशिनावावेन
 त्रये ॥ १० ॥ आतकर्म ॥ मुरपा वलो केन सुतस्याजीवतः पितृविमुक्तेतयते
 अक्षाविष्विष्टतोदये ॥ ५५ ॥ वायु आतनाम ॥ आतस्यापवमपिनेरातये मुद्रुते पंचाय
 नातिपदेरापनिलंबितस्वर्गसुव ॥ ५६ ॥ सिरौ यमनि वातामकेखयुक्ता ॥ ५७ ॥ आतनाम ॥ आतनाममिष्टमाहुः
 दाहरोराविषुवाविभीयते ॥ ५८ ॥ समिवतवनरस्य ॥ ५९ ॥ स्थाहसौ यदिविलो कितारु ताशापकादरो द्विविशणां अविगां तयो ३०
 वैर्यानां पोः ३० ॥ नामकर्मणो पांयथा क म ॥ ६० ॥ सुदेहिदादरो विरोडाविरो पोः ३० ॥ दिवा आतिकावस्था नक्षितं ॥ ६१ ॥

कामा तीक्ष्णमरुर्बिति ॥ असापरादे विगते परादे स्याद्वापरादे च
 यद्यमासि व ॥ व० शकुले विसेरातादे उवस्य कुर्यादघनामकम ॥ मितादित्यमप्यो तनोरात तिव क्स्वाती ॥ निह्या ॥ अता
 शक्रे राखिरारा० रु दौषादिन कुरु ॥ जो पुरारो स्थिने ॥ वि० अ० य० व० रसी० विद्याथन व मी० रु० घा० जेता ग० वे० सा० रा० या
 मृतपापपा० विवसेनामान कुकुले ॥ रा० रये फी० न० स० न कुर्याद्विरो० फी० न० पारा० न० प० क० वि० रा० मा० स० ने० वा० वि तीये० रु० न० मे० न० वा० रु० य० ल० मे
 ववावतुर्धे विरोस्व नातौ ॥ वि० व० य० ने० न० ॥ विलोकइता न विधि य० य० क० व पायपान रुनिष्क माग० मासे त० तीये० य
 मासे व० धे० र्मा० मे० वा० स० मे० वा० वे० ॥ क० नो० वा० रो० वो० उ० रो० द्धि० म० अ० रा० दे० वा० उ गरा० नि० व० मा० ग० वि० अ० रा० ॥ १० ॥ क० ग० वि०
 न० न० ती०

४६ मनःतं विस्वतो म स० विविस्व य स द स स० वे
 यतिता १८ स० रूपा सा स्यात्ता स० स० म दात्मनः । त वै क स्या० न य क स्या० प्र वि त क म ने क था । अ प र य
 नैव नैव स० स० नी ने पा० उ व स्त या । त तः स वि स्म या वि सो रु स नो मा ध नः क य ११ प्र ा म म
 सान सा नैव० क ता० क लि न ता प ता ५० ४५ अ रु नि ११ प र य ा मि त्रे वा० स्त व रे व रे नै स वा
 ० स्त घा तु त वि रो प र य० प ा व १ व र य ा ता मी रा० क म ला स न स्य म् वी० स स व नि न ग ०
 स वि व १ व १ अ ने क वा रु १ न व क्क ने त० प र य ा मि त्वा स र्व तो न० त नु प १ ना० त० न म थ ० न ७ नै स वा
 ० प र य ा मि वि रे खे ख न वि खे नु पा कि नी हि न० ग ति न० व कि ता० व ते शो ना रि० स र्व तो री ति न० व १ प र य ा

मित्वा उर्निनीरुं समं तात्तीमानला कछु तिमि प्रमोय ॥ त्वमिह न ॥ पनमं वेदितव्यं त्वमस्य विस्वस्य
 पनं निथान ॥ त्वमस्य कायः राखत थमं गोत्रासना तनस्त्वं ॥ पुनः पोशतो मे ॥ मनादिमिथ्या ॥ त्वमनं तदी
 यमिनं तवाहुं राशि ॥ सुयनेतः ॥ परमा मित्वा ॥ तीतरुता रावकं स्वते कस्या विस्वसि ॥ तपः ॥ तं ॥
 आवापुष्टिका ॥ विमं तनं ॥ दिक्पातं त्वयै केन हि सस्य सवशि ॥ इत्या ॥ हुतं पुपुष्ट्यं ॥
 तदेव लोसुतय ॥ ० प्रकाशितं मदात्मन् ॥ ममीदित्वा सुनस्य ॥ प्या विरा ॥ ० तिके विहीताः ॥
 प्रां कल्यो ॥ ० मतिः ॥ सीत्तु क्वा मदा वि ॥ सिथिरां ॥ प्या सुव ॥ तिवा ॥ सुति ॥ ति ॥ ० ॥ क्वा ॥ ति ॥ ॥
 पुनः दिक्पावसवोये ॥ नसाथा विस्वेदितो मनुतस्वो म ॥ वासा ॥ गं ॥ थव्य ॥ मारुत ॥ सि ॥ थ

परममेपाद्युपाणिशत राधेय स रु स रा ॥ नानाविधानि विद्यानि नानावता कृति निव ॥ १
 रमादित्यानुवसुनुमानस्विनौ मनुतस्तथा वदुना ॥ २ सा उ व ति परमा स्वयं विता नत ॥ ३ दे
 कस्थं क ग क ह ॥ परमाद्य स न ता न न म म नै नै ॥ ४ ता के रा य वा न्ना ३ सु मि ह्रु ति ॥
 ननुमां रा क ॥ दो ३ शु भाने नै व स न रु वा दि वि ॥ ५ रा मि ते न रु ॥ परममेपा
 ग मे स्व न ॥ ६ ॥ क य ॥ ७ ३ ३ क्वा त तो ता क्वा सा यो गे स्व तो द नि ॥ ८ ॥ रा यि मा
 लवाद्ययि प न म ॥ ९ ॥ पु प मे स्व न ॥ १० ॥ क व क्वा न य न म नै का तु त ३ र नि ॥ ११ ॥ म नै क दि वा त
 न ता ॥ दि वा ने को थ ता ॥ १२ ॥ य न दि वा मा न्ना ॥ व न थ न ॥ दि वा य ॥ १३ ॥ ले प न ॥ स व स्व य म य ॥ १४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

७
 रतो पश्य इ पश्चात्तावतै नं विनिश्चये ले० ३४५ विनिश्च० दूतः कदा कथापि
 नैस्वयं स्वयं कौः ॥ १० ॥ उपतिरिक्त ता विस्मृत गेव दानि ता ॥ १० ॥ तिते क पुत्र
 नापातु जे जे
 स्वहापता ॥ विवला ॥ १० ॥ मे पुत्रा सीकुत्रा द्वा उ कंता आत न ता
 बुला ॥ १० ॥ लंकुत्रा कतापता ॥ १० ॥ तरो कूल कांति पुत्र बुला ॥
 दल ॥ १० ॥ दल ॥ १० ॥ हां वि कांता स्वात राता ॥ १० ॥ हापता ॥ १० ॥ २० ॥ पुत्रिका ॥
 लिहा न ज्जि न हता र्हा ॥ १० ॥ पुत्रि न स्वा ॥ १० ॥ विवला ॥ १० ॥ २० ॥ त क दो ॥ १० ॥

[illegible]

न लो गो नामा सा ३ रतो ध्याय ३॥ — प रु नि ४३० नि स्ती क क्षा प ता म रु ५ क क्षा क म ल प वा ३॥
 प्र ा म स व ा म की त नि ० वा रु रे व ० रु ग य पे नि ० नौ मि ना य ता ० रु नि ० — ५ क क्षा य य ३ दे ० द्रा य
 २७ क्ष न रु द्रा य — र पे नि ने ना घा य ३ गु मि ता रा य न मो वे ३ ० व — वे दि ने ५ — ५
 वि रा य वि ० ३ — मा ता सा ५ — ५ मा वा रु न ० न ग ना मि ५ — ५ अ प ना ५ — रा रु सा ता
 ५ — ५ रु नि ४३० रु ति त ग व रु गी ता रा मा सा ५ — ५ स्ती ना म न ० द्रा य न द्रा ५ — ५ स्ती ५ — ५
 अ र य ता वा षा ती वि त्र द्रा ता त रा र्च दी व ० लि सि रा ० षा य ता त र शी व द्या यै ० न नि रो प नी यि ० को प ० न रु य हा लु ले स क र ० मा

नानोति यत्किमपि न तत्ते न नाना यत्वा विपरीतं वा ।
 ० प० वै ते तस्य देतवः । तत्तैव सातिकतविमात्मानं केवलं तु यः । परमत्मा कृतबुधित्वान्न स १
 स्यात्तु उक्तं तिः । यस्य नाना कृतो तावो बुधियस्य न विविधो लोपात्ते । कृतापि स ३
 मां लोकां न कृ० तिन निवध्यते । ज्ञानं कृ० पतिज्ञाता विविधा कर्तव्यो नाना
 कृ० न तां कर्म कर्तेति विविधः कर्मसि ग्रन्थः । ज्ञानं कर्मविकृतवि विधैव गुण
 ते ३ तः । प्रोच्यते गुणसंस्थाने यथा व ३ कृ० तानापि सवतु तेऽये नैकं तावज्जवायमी

गः सावित्री सतः न देश कुरालं क मरु राले नानु पञ्च ते त्मा गी सत्व मया विसो मो धा वी क्रि० न स०
 राजः नदि रैरु त्ता० रा कल० त्मा कु० कमा ४ पाद रो पतः ४ यस्तु कर्म फल त्मा गी सत्मा गी त्मा नि
 धी यते अ नि स मि स० मि स० व नि वि थ० कर्म ताः ५ फल० त व त्मा त्मा गि ना० प्रे त्मा न त
 ६५ सत्मा सि ना० क नि त्मा प० वै ता नि म दा वा दो का व ता नि नि बो थ मो सा
 ० रा मे क ता० ते प्रो क्ता नि सि थ ये स र्व क र्म सा० अ थि मा न० त घा क त कि न ता०
 व प य न्ति थ० वि वि था स प य क्ते सा रै व० वै वा त १० व म० धु पि य सि रा नी न र्द रा नी न वा

तद्भावात्तानोदितुषकाश्च विविधः सः प्रकीर्तितः यस्तु नतः पः कश्चिन्मन्त्रः कार्यमेव
 तद्वा यस्तु नतः तपः सैव पावनानि मनीषिणां । एतान्नापितु कश्चापि सः ॥ यन्मन्त्रापरिणा
 निवृत्तिका ॥ नीतिमेवायं निश्चितः सततमुत्तमः नियतस्तु सन्मन्त्रा ॥ सः कश्चापि
 नोपपद्यते । ॥ मोक्षस्तु सन्मन्त्रा गसा मसः पति कीर्तितः ॥ ३॥ सन्मन्त्रो
 वयत्कश्चापि यस्तु रातया तन्मन्त्रा कृत्वा ना ॥ कश्चापि गः
 नैव तन्मन्त्रा गः पः लः ॥ लतेतु । कार्यमित्येव यत्कश्चिन्मन्त्रः नियते तु नः सः गन्मन्त्रा परिणः नैव सन्मन्त्रा

१० विथः स्मृतः वाञ्छा एव सौम्येन वेदास्य स्यात् सविहितः ॥ उच्यते स्मृतौ सविहितः स्यात् ॥
 क्रियाः प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सन्त तन्वृत्तवादिनां तद्विहितमिति सन्थाय पील्य कृतं ॥
 यः ॥ गानक्रिया सवि विथाः क्रियां तेभ्यो कृत्वा सति ॥ सत्त्वा वेदा ॥ उच्यते स्मृतौ सविहितः
 तमेतत्तु ॥ ते ॥ परास्ते कर्मणि तद्यथा सत्त्वा ॥ पाद्यं च ॥ यत्ते ॥
 गानेव स्थितिः सति चोच्यते ॥ कर्मवैवतं च ॥ सति चोच्यते ॥ वातिथीयते ॥ कर्मणा
 उच्यते ॥ तन्वृत्तं तन्वृत्तं कृतं वयात् ॥ सविहितः च ते पाद्यं नवतत्तेनानो ॥ ३५ ॥ १५ ॥ तद्वा

६५ कृत्वाते। सध्यापन जाततं तपस्व विविथं न वै ॥ अ पीलाकां नितिलु कौः साविकं पवित्ररुते। सत्का
 न्मानुपुकाधितो ३० तेन वै वयना कियते तदिदं प्रोक्तं नाक सन्वनमधुव॥ शुक्ल आदेगा अन्मानो
 यत्तीड्याकि यतेतपः॥ पन स्यात्सा र्नापं वा तत्तामसं शुभं दत्तं। ततकानितिय सानं रीय
 तेन पकानितो। तेरोकालेन पालेन तत्तामसं साविकं स्यात्। यत्तु पत्तु पकानाधं
 पनमृदिरय वा पुनरीयतेन पविक्लिशं तत्राक स मुयदत्तं। अरोसकाले
 यत्तामसं पालेत्तत्तु रीयते। असक्तमवेकात् तत्तामसं शुभं दत्तं। अतहावितिनि रैरोव आतासि

तित्तको विधिः सोय इ अ ते। य स म मे वे ति मो नः स मा था य स सा वि क ष ष ति सिं था य तु पी ल ० ३०
 ता प म पि नै व य तु। इ अ ते त न त स्ते म त ० य रुं वि धि ना क स ॥ वि धि की न म स सा नं म न्व की
 न म र ति ता ॥ स आ वि न द्दि तं य रुं ता म स ० प नि व रु ते। वै व दि नं गु तु पा क उ म न ०
 सौ व म क ० न ० व्र अ व य म नि ० सा न सा नी न ० त प रु अ तो। अ नु दे क त
 न ० वा क ० स त्प ० पि य क्ति तं अ व य तु। सा था या त्त स न ० वै व वा अ य ० त
 व रु अ ते। म न ० प सा ॥ सौ म त्व ० मौ न म्मा त्त वि नि य रु ॥ ता व स ० रु धि पि तौ त त पो मा न स

[illegible]

१०॥ क० कानर० ॥ क० कामनागवला विता॥ कावय० त॥ रानीनर० तु तयामा मवेत स॥ मा० ने
 वा० त॥ रानीनर० ता वि० आ० सु० न० नि० ख० या० न० मा० दान० र० ख० पि० रा० व० र० वि० वि० थो० त० व० ति० वि० य० ॥ य० र०
 स० प० स० घा० तान० ते पा० ते र० मि० म० रा० ॥ मा० य० ॥ स० व० व० ला० नो० ग० रु० स० श्रीति वि० व० थ० ना० ॥
 ५० न० र० मा० स्नि० ग्या० स्थि० ना० द० या० मा० दाना० सा० वि० क० पि० य० ॥ क० दू० म० ल० व० गा० ल०
 ल० ती० क० तु० रु० वि० ता० दि० न० ॥ मा० दाना० ना० रु० स० र० यो० सा० उ० स० रा० को० मा० य० प्र० रा० यो० त०
 या० म० ग० त० न० र० ॥ उ० ति० प० य० पि० त० व० य० व० ॥ तु० कृ० सि० म० पि० रा० मे० थो० तो० क० न० ता० म० स० पि० य० स० पी० ला० का० ति०

एनर्थनि० मसौ मया दत्तं रातु दनि पौवा पना न्नपि । शीखनो न्न म द० तो म सिधो न० वल वा न्न च ली ।
 म तज्जोति म न वान स्मि को नो स्ति रा हरो मया । य स्तो रा स्या मि मो दि षा इ त्त का न वि षो दि
 ता ॥ म ने कं वि त वि ज्ञां ता मो द जाल स्या वृत्ता ॥ प्र रा क्ता ॥ का मा तो ने षु प त
 ति न न के रु वौ । आ त्मा रा ता वि ता स्र व या थ न मा न म रा वि ता म य क ते ना म य
 सौ स्ते द० ते ना वि धि उ र्व क० । म द० का न० व ल० ३ प० का म० को थ० न रा० सि ता ॥
 म न्ना त्मा प न रे दे षु प्र हि व० तो ता रु य का ॥ ता न द० वि ष त० कु ना न्न रा० सा ने षु न ना थ मा न्ना ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ अथ शिवसंज्ञायाः प्रथमाः ॥
शिवो नाम सदा त्रैलोक्ये भूतनाथः सर्वभूतहिते रतः ॥
एकः परमेश्वरः सर्वगतः समस्तलोकपालकः ॥
वन्द्यः पूज्यः शरणार्थी देवताः सर्वान् ध्यायेत् ॥
नमो भगवाते वासुदेवाय ॥

उक्ताते। उत मः ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 यस्मात्त नमः ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 मुक्ते कानाति ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 तस्य वि तत्त ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 रा स्वे स्ती क ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।
 पोत म यो गो ना ७७५ स्व नमः १५५ मात्मे तु गदुतः। यो लो कत यमा विरय वि तत्त वि यरी खनः।

तं वापि तुं श्रुत्वा वा ॥ पाद्वितं (विष्णु कान्तानुपरां विपरां तिकान वृत्त वः।
 यतं तो योगिने सैनं परां त्मात्मन वृत्तितयतं तो पाकृतात्मानो नैनं परां त्मावेत सः। यः।
 'दित्तगतं ते ओ ॥ क ग ता स य ते सितं। य वं ३ भा सित्य श्री ओ त ते ओ दि धि मा म कं। पा मा वि र म
 न तु ता नि धा न या ॥ म द म्भो क र्णा। पु ष्ठा मि वौ प थाः स व ः सो म्भो तु दा ॥ न सा त्मा क म्
 म दं वै र वा न ॥ नो तु त्वा र्ण प (मि नां नै द मा स्तित ॥ प्रा ता पान स म्भ ॥ ७ कृ ष प वा ष ॥
 न न तु दि थिं। स व र्णो ना दं दृ षि स नि धि शो मा तः स्मृ ति शानि म पो द नं वा दे रै स्व स र्वै न द म्भो व वे र्णो
 वे रां त क दे र वि रे द वा दं हा दि म्भो ७ ३ पौ लो के त न स्वा त न व व वा क नः स द पि ता तु ता नि कु र खो क न

[illegible]

भाद्रमासतस्यावयस्यवारासंतस्यवयमस्तिरस्य स — स्तौकांतिकस्य न५ — ५२५ — ५
 भूतहातिस्तीक्ष्णवर्णवर्णितास्यपनिबृहद्विधायां सन्दि — तायां योगरास्तेस्तीक्ष्ण
 भाद्रमासंवातेम — दातातेतीक्ष्णवर्णितास्यवित्तयोगोना मन्तुर्हो
 ध्यायः ५ — ५ — सीतामन्त्रं वा न५ — ५सी५ — ५भूस्तीतय ० वा न५ — ५
 दुर्धुल्लभं ५ — ५ — रासमस्वयं प्राहुर्नकायं ५ — ५भूस्तीतय ० वा न५ — ५
 सदेवदित्वा ५ — ५भयस्ते ध्वं न स तास्य स्य रासागता प्रव्याविषयप्रवाब्बा ५ — ५भयस्ते लान्ता
 नु सततानिकमानि वंथीनि मुने च लोको ननु पञ्च स्ते न तयो पञ्च तत्तेनां तो नवादिनवरां ५

नतीतोतवतिप्रतोकि मन्वावः कथं वैतां स्त्रीनुगता नतिवर्तते ॥ सीत गवागुवाव ५५५ कारां ३३
 वृत्तिं न मोरुमेव नपा ० उवा न दे शि स ५ वृत्तानि न नि वृत्तानि कां रुति ॥ रु ग सी न व ग सी नो गु तौ यो न
 वि बाला ते गुता ॥ व र्त्तं त इत्येव यो वृत्ति मति ने ० ग ते ॥ स म ३ ४ स रु स ० स्व र्त्त ० स म लो सार म का ० व
 नः तुला पिया ॥ पि यो धी न सु लानि ० य त्मा स ० सु ति ० ॥ म्मा ना व म्मा न यो ० सु ल सु लो
 मिता नि प रु यो ॥ ॥ रा व नि ० त प ति त्मा गी गु ता ती त ० स रु य ते ॥ म्मा ० व यो व र्त्ति वा
 नेता त कि यो गे न से व ते ॥ स गु ता ० ह म्मा ती त्मे ता वृ वृ म्मा तु य म र क ली ॥ ते ॥ बु द्धा गो दि प्र ति

लान्तिपयते। न कसि पुन्यगता कर्षाणि पुन्ययते। तच्चापलीनसमसिष्ठुतु जोनि पुन्ययते। कर्ष
 ताः सुकतः रमाः ३० साविकं निमलिं पिलं। न कसि सुपिलं ३० समानं तमराः पिलं। रावाहाः ३० जाय
 ते कानं न कसो लो ३० तातन। पमानमो नौ तमसो तवतो शानमेवना दुर्ध ३० गतुं विरावस्था
 मथ्येति मंतिना ३० कसा। ३० कपन्यगतावतिस्था मथोगतुं तिता म ३० सा। नान्मं ३०
 गोत्तः कतानि ३० यत्र ३० शात्रु परप्रति। ३० गोत्तः सुपनं देति मथ्यादः सोयिम्भुति। ३० गाने तानती तमली बु
 दी ३० कसा ३० तवाव ३० क म म ल कना ३० रौ वि ३० को म त म रते। मरु ३० ३० कैलिं ३० मै स्त्री नगता नेता

धिष्ठो रुद्र न० सर्वत्रेति ना० प्रमा गल स्य निमाति सन्निवर्धति तानत। सत्त्वं सुत्वं रं कृत्यति न कः कर्मणि
 तानत। कानमावृत्त्य तु तमः प्रमा ते स० कृत्यत् तान क सत्त्वं सत्त्वं त्रुय सत्त्वं तव तितानतान कः सत्त्वं त
 मस्यैव तमः सत्त्वं न क सत्त्वं सत्त्वं सर्वद्वाने पुने देस्मिन् न कारा ७१ भायते। कान० यत्त तत्त्वं
 २६ ध्यावित्त्वं स तामित्त्वं तानोत्त्वं पवृत्तिना त० त० कर्मणि माराम सत्त्वं ७१ ध्यावित्त्वं तानोत्त्वं
 काय० ते विवृत्त्ये तनत पत्तिम प्र कारो पवृत्ति सत्त्वं प्रमा ते मो द पवृत्ति तमस्यो तानि
 यत्ते विवृत्त्ये कुत न० न० यत्त सत्त्वं पवृत्त्ये तु प्र न य० यत्ति ते रुत त्त्वं त गो त्त्वं मदि तानो का म न

[illegible]

[illegible]

ति — तनं तमेव मृत्युं सुति पतयताः ॥ यावत्सां जायते किं विहाय रथावन कं गमं ॥
 केव केव कृशां योगातद्विषयित नत पति स मं सवे पुतु ते पुति मं तं प मो स नं ॥ विन रय ह्व विन रय
 ० तं यः पर्यति स पर्यति स मं पर्यति स व वि स म व स्थित मी रव नं नदि न
 स्थात्मानां मानं त को या ति पतां गति प्र क त्पै व व क म् ॥ ता क्रिय मा
 ता नि स व र ॥ यः पर्यति त द्या मान म क त निं स पर्यति त न पुन प्य ता
 व मे क र्म म नु पर्य ति त त प व र वि स्ता नं व स स प य ते त ता म न वि ता मि गु ता वा त न मा

यमहावायोपपद्यतेऽप्रकृतिः पुत्रं वैव विथानादी तु तावापि विकानां स्रुताणां सैव विधि
 प्रकृतिस्तवावाका यकानां कतुवेदेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुत्रं वैव स्रुताणां सैव विधि
 अते। पुत्रं वैव कृतिरुद्योदितुः प्रकृतिरुच्यते। पुत्रं वैव स्रुताणां सैव विधि
 २४ स्रुताणां सैव विधि निष्कृताः। पुत्रं वैव स्रुताणां सैव विधि
 मात्मेतिवाक्यं क्लोदेदेस्मिन् पुत्रं वैव स्रुताणां सैव विधि
 वृथाव तस्मान्नोपिनस्यतु योतिशायतोऽप्यानेनात्मनि पर्यन्तिके विद्यमानमात्मना जने
 सां स्रुतेन यो गेन कर्मयोगेन वापते। जने ते वैव स्रुताणां सैव विधि

वासुदेवमस्तुते। अनादिमात्मानं बुद्धनरात्मा राशुभाते। सर्वतः पाप्मा पापं तु ह्यवतोक्तिं विनाशु स०। स
 र्वतः शुचिमात्मके सर्वमावृणोति मति। सर्वेन्द्रियगतामात्मनः सर्वेन्द्रियविवर्जितं। असाकृत् सर्वतः वै वनि
 गतां गतातो कृत्वा वदितं तस्य तु तावता मावृणोति न मेव न। शुद्धमात्रं त विज्ञेयं पुनरर्थं
 नांति केन यत्। अविज्ञेयं कृतं तेषु वितं कृत्वा विज्ञेयं स्थितं। तु तत त विज्ञेयं
 अलिप्तं प्रत विज्ञेयं। पुनरुच्येति पापमपि तज्ज्योतिस्तमसाः पनष्टुभाते। ज्ञानं ज्ञेयं सा
 नमगम्यं नृदिसर्वस्य धिहितं। इति ज्ञेयं तद्याज्ञानं ज्ञेयं बोद्धं स मा रातः। न त कृत्वा तद्विज्ञा

उवासी नो गत का धन सव नि० त पति त्मा गी यो मत कुः स मे प्रिय १ योन द
 सो व निन का० कति हता रुत पति त्मा गी त कि मा नू यः स मे प्रिय १ स म १ रा तौ व मि ते व त घा मा
 ना व ज्ञान यो १ सी तो पु रु स ३ ६ से पु स म १ स ० ग वि वि र्जि त १ तु ल्या नि ० त स्तु ति मौ नि सी
 तु शो ये न के न नि ता मा नि के त स्थि न म ति त कि मा नू यो प्रि यो न व १ ये तु थ म्मा मि
 त मि ३ ० य घो कं पृ थु पा रा ते । स र थाना म ता न भा त का स्ते ती व मे प्रि य १ ७ ० १
 १० त ह्मा नि ति सी मा त ग व र्णा ता रु प नि प रु व रु वि द्या या ० स ० र्द ता या ० यो ग रा स्ते र्नी
 क म्मा रु न स ० वा ३ म द्वा ता न ते ती म्मा प व र्णा त कि यो गो ना म द्वा र सा था य १ ५ १ र्नी ता म्मा व ०

[illegible]

आयनम०५ पुरुषि०३० सीतगवानुवाच० प३३० रात्री० कौ० ते य सेव मित्तमि तिथायते।
 पतयो वेतित० प्रा० ० सेव स रतिरै दि० ३०५०५ सेव रु० वापिष्ठा० विधिस्वर्व से वे पु तावता सेव से
 वरुयो रानि० यत्र कान० मत० ममावतत से त० यत्र यत्र क्व यत्रिका विद्यत स्वयत्तु।
 सवयो यत्त० ताव स्वत हा मा रो न मे रा० ॥ नृषि तिर्व रुथा नीत० कु० रोति दिवि
 थै० पद्य क० वृद्ध युव पक्षै स्वै व देतु माति विनि स्वि तैः मदा तु तान्मद० का
 नो बुधिन का कमेव वा३० दि० या० ॥ ३ रौ क० वप० वने० दि० यो व ना३० ३० दे० व० स० ३० स० ३० ल्यात से

म० क० त० न० । म० त० भ० ये त० क० न० म० नि० र० यो० म० व० क० प० य० पा० रा० ते० रा० व० त० ग० म० नि० त० य० अ० कु० ह० र० ध० म०
 व० ल० ध्रु० व० । स० नि० य० म० वि० य० म० स० व० त० स० म० व० य० य० म० ते० प्रा० व० नि० म० मे० व० स० व० तु० त० द० ते० न० त० । १० के०
 रा० धि० क० त० न० स्ते० वा० म० क० क० रा० क० ने० त० स० । म० क० क० नि० ग० त० उ० स० ने० म० व० त्ति० ने० धी० प० त० ।
 ये० तु० स० वा० ति० क० म० ति० म० यि० स० न० स० म० त० प० म० । अन० मे० ने० व० यो० ने० म० म० । य० त० द्रु० प० स० ते० ।
 वा० म० न० स० म० च० र्त्ता० म० स० स० न० स० न० स० त० वा० म० नि० वि० ना० त० म० ध० म० य० । वे० सि० त० वे० त० स० ।
 म० ध्रु० व० म० न० म० थ० ह० म० यि० तु० धि० वि० दे० रा० । नि० व० सि० पा० नि० म० य० व० म० त० दु० र्ध० व० स० रा० य० । अ० धा० वि० त्र० स० म०
 या० तु० न० रा० क० चि० म० यि० स्थि० न० । म० त० म० स० यो० ने० न० तो० म० म० नि० कु० तु० न० म० य० । म० त० म० स० यो० स० म० धो० सि० म० क०

मप न भोत वामा धमिपि कमात्ति कुर्वन्सिधि मवा श्मसि अधै त ३ धरा कोसिक तुं म योग मा
 स्तितः शसर्व कर्म पिलत्मा गंततः कुतु यता त्मा वा नृसे यो दि कान मत्मा सा त्मा शाना थाना नं विदि
 धाते। ध्याना कर्म पिलत्मा गंततः कुतु यता त्मा वा नृसे यो दि कान मत्मा सा त्मा शाना थाना नं विदि
 तः कुतु यता त्मा वा नृसे यो दि कान मत्मा सा त्मा शाना थाना नं विदि
 योगी यता त्मा वा नृसे यो दि कान मत्मा सा त्मा शाना थाना नं विदि
 स्या ब्रह्मो द्विकृते लोको लोका ब्रह्मो द्विकृते नृप ॥ १ ॥ पश्चात् तयो दे गै भु को यः स व मे पि यः शान पे न ॥
 कु वि तिः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri. Funding MDDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

निमोत्साह तस्य विष्णोर्नीवज्ज कंकालाधिपति। विशिष्टावपलादां गीर्जया देवीसुनेख नीधिलेप्यं यत्तु नराजानदी क्षतस्य तदा॥
 सन्तिमीशो निनीवी नानाधनणी धाविणी कृत्स्न। ओम्निनी वैषिणी यो ननु उक्ता द्युष्णिगी देकुती भयादु तिस्रोऽपु न श्रितेन कीपु उक्ता भानी
 उताः कलात्मिका। इरावर्तु कथा का कलाखोऽस्य यत्ता। कारापी धलादे कीना तीन च हिकासिनी। बडा पानस्थिता गुरा मेविक
 ५४ दंभुपिणी। आदिधारासतीस्य तास्य तास्य नजिदे किंती। तिकोथा वि कोला राता क हनिधुने का विणी। आदिलुङ्गी गुमाधाना
 ५५ पत्रवृत्ताति कावलिधो काले रम गुरा वासाय वसं विषुष्णिगी। इतस्य श्रीवती देवी कविनी का भवर्क तप विवर्णभाग
 गमेवीरु स्मिनी का सुकीरु हाम ४ भासा वि धाउ पा निधि धा वि गुणा स्व ६ कास्य तास्य सुभुसी वेद विख्याता स्या स्मिनी कथा
 पिणी। ३० डिनी गुं डिती का पुा सिखिती ओ इत्यं दतिश सौता भानी सानं सा पत्रवाण प्र तं किती। वाप सौता सान स्या की सान्यत
 कपादुको। सन्ध्याव लिङ्गि रंगं धाता वरुणा रुडा निनु वणप नं किता न फतथी का का भथेनु उक्ता ४॥ त्रिंता भानि उक्ता विषाणा क
 कालिनुष तामा। स्य द्वावे किनी रोना का सिका का भतं कनी। यत्र शाता द्यु पादि कांता का भान वानना। भान लव विष्णो ल विष्णो
 ओत्तिनुषाद विष्णोती प्ता अकृता सु तिस्रुता कलाताव किंती सती। इतां कालिः प्रभा मेती प्रभितिः प्रभा ती गतिः। ख वानि सान प्रव

[illegible]

[illegible]

वचनिका विष्णोः उवाच विष्णोः — श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । चतुर्वर्णादिनां श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । अथ तां युद्धं युवा
विष्णोः मंगलान् चतुर्वर्णादिनां श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । अथ तां युद्धं युवा
कलंजिता । नष्टकलंजिताया पीता । सर्वदन्तिनी खट्वरी । अत्र तावत्तु तां नदीं शोभायै श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । अथ तां युद्धं युवा
स्य चतुर्वर्णादिनां श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । अथ तां युद्धं युवा
ल्लिकानवधल्लिका । देविकानर्ण
अतां देवी उवाच युद्धं युवा
काशिकाया उवाच श्रीशिवो ह्यस्यैव कर्मणि । अथ तां युद्धं युवा
कालं युष्मिन् । अथ तां युद्धं युवा
सर्वमोक्षदिवर्जिता । दन्ती । शिरसा दिशोऽस्त्रा देवाः ततो ननु युष्मिन् । तां नदीं कलंजिताया पीता । अथ तां युद्धं युवा
ती गौरी शिराणी । अथ तां युद्धं युवा

[illegible]

[illegible]

अलमसंनरास्येणरुते नचि त्वाशिततः पतंत तनिम्यर्णित वां यस्मिन्न ता नजिव तंति
 क्रयः तमेव वा अ० ७ उष० प्र पथे यतः प्रवृत्तः प्रस्ता ७ नां पी॥ ४॥ निमर्णितो दक्षित संनरो
 वा अ० ना त्वा जित्वा विजिम्बुत्त कामा ४ (३० वै विष्णु काः रु ३ः सं सं सै र्वि ० त्प सुकाः
 प ५ र म वा य० त द्वा गत त त्वा यते लु यो न रा रा० को न पा व क ४ य जे वा
 न जिव र्तं ते त द्या म प न म० म ५ न मे वा० रो की व लो के की व तु तः सं ना त न ४
 स नः ५ ज्ञा नी० त्रि या णि प्र न ति र्वा जित्त र्व ति ॥ ५ र ची न० य र वा नो ति य वा
 ७ त्वा म ती र व न ४ न की तै ता नि सं या ति वा य र्ण ना नि वा रा या त् ५ रि नो त० व रुः सं
 र नि० व न सं न० प्रा ण मे व वा न नि ज्ञा य म न स्या य० वि वि या न प सं व ते ॥ ५ त्वा म० त० स्थित०

[illegible]

५५

आलोचिप्रतिष्ठा ॥ ५ ॥ अमृतस्याकायस्य वासाख तस्या वनमस्य लुप्य सौकांतिकस्य वा ॥ १॥ — ५
 ॥ ५ ॥ दनिष्ठं तस्याति सीमा दत्तान ते रातस्य दस्यां दित्यां वैध्या राकां सीती श्रीपर्वणित
 गवजीताश्रुपक्ष
 गयो गोनामव
 भवसीतगवानु
 स्थिरस्य पपाति
 गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ॥ अथ खसुलानामनुसंततानि समानि वंभीनि मनुष्या लोके ॥
 ननु पमस्ये दतघोपनृता तेनां तो नया विन वस्यं प्रतिष्ठा ॥ अथ हा मो नं रु विरुः ॥

४

मः सो सा यथा विनो अ व स त द्वि ना ल सु म ता पा म पि की ल क ण की ल वि नै व सो त्प रा
 त वे त्प सो पि मे म म वा प्रो ति स त तं का य त त न थ सि था त्प द्वा त्प ता री न व सु नि स क ला ना पि
 के वि सो त्प द्वा न सि था ति न म त नो प थ त त न क थि र पि वि थ से वि नै त ही था वे ये न स र्व म द्वा त्प
 म ग्रा त्प पि सि था न्ति लोक रं का मि मा न्द न क द्वा न म त्प द्वा मा स र्व मे त्पि क
 सो त्प वै स र्ग का या सु त द्वा ग्ग अ थ का न स र्ग का मा प्रो ति स त्प त्प न ता य द्वा वि थि न
 सो पि मे म म वा प्रो ति स र्व मे व न स र्ग का मा प्रो ति स त्प त्प न ता य द्वा वि थि न
 प्रा ति ण द्वा ति ना न्द यै वा प्र सि था सि र थ त्प वे पा की ले न म द्वा वै व न की ल तं जो नि क्की ल
 था यै ना नि त्प न्द यै वा प्र सि था सि र थ त्प वे पा की ले न म द्वा वै व न की ल तं जो नि क्की ल

४

लेको रुद्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० पु० रा० पा० ॥
 जै० नानाशिकात्मा ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 क० तन्म। १० वै मेव रुद्राक्षीं। पु० तु व० रुद्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 ३५ ती० द्वितीयाक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 थां विविधा य० थैः प० व० ता० म० ती० कु० म० ती० नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 तु० नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०
 मि० नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा० तु ते को० नक्षत्राक्षीं नक्षत्रिकायेन कर्त्तुं। ४० रा०

कृत्वा योगिनः ॥ मा ८ पेटा ८ न कर्म ८ ३ ॥ सान्नाय मरा खत ॥ ना ८ व ० ति मन्ना त्मान ॥ स ० स ० धि ०
 पनमा ० गता ॥ आव ० त व नालोका ० न नावृत्तिनो ० नाना ० पेटा ८ कौ ० ते ८ पुन कर्म विचि ० ते ॥ स ०
 दस्य ८ गप ० त मरय ८ विज्ञा ० गो ० धि ० ३ ॥ ना वि ० उ ग रा द सा ० ता ० ते ० क्ष ना व वि ० न न ॥ न व ० का
 ३५ का कृ ० य ० स ० व ० ३ ॥ त व ० त्मा द ना ग मो ना त्मा ग मे प ली य ० ते त तै वा का कृ ० स ० र्ति
 के ० तु त था म ० स ० वा य ० तु द ० तु वा प ली य तो ना त्मा ग मे व रा ० पा ध ० ३ ॥ त व ० त्मा द
 ना ग मे ॥ प न स ० र्मा तु ता वो न्यो वा क्को वा क्का हा ना त न ॥ य ० स ० स ० वे ० पु तु ते पु न र ० पु न वि न र ० ति श्मि वा क्को
 न न ३ ८ कृ ० स ० मा ० ३ ॥ प न मा ० ग ति ० य ० ३ ॥ प न न वि व र्त्ते त था म प न म ० म न ॥ पु न ० स ० प न ० पा ध

कर्मस्वात्मन एव तत्रा कर्मस्यैवार्थं त्रुता न कुरु दृष्टो म न प्रयातो ॥ १६ ॥ उत्तमः ७७ पस्व नमः
 पनमात्मो त्रुता दृ तः ॥ यो लोक त्रुता यो वि रण वि त्रुता वा यदी ख नः ॥ १७ ॥ यस्मात्क न मती तो रु
 म न ना र पि बो त्रुता म तो वि नो के वे ने व प्र छितः ७७ पो त्रुता म ॥ १८ ॥
 यो मा मे व म स म्भु को मा ना ति ७७ पो त्रुता म ॥ १९ ॥ स र्वा वि त्रुता म ॥
 व ता दे न ता न ता ॥ २० ॥ इति ७७ पो त्रुता म ॥ २१ ॥ स र्वा वि त्रुता म ॥
 बुं वा बु धि मां त्रुता क ते क ते स ता न ता ॥ २२ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
 म न्मा दा ता न ते रां त रा द र्मां स न्दि ता य्मां वै य्मा रा क्मां री ती ज्मा प र्वा ति त ग व नी ता रु प

वापितुं कान्ध्या गुणा नित्यं विष्णु कान्ध्या ननु परणंति परणंति सा न वरुषः ॥ १० ॥ यतं तो यो नि न सै
 नं परणंता कान्ध्या वस्वितं यतं तो यो कान्ध्या नो नै नं परणंता तस्या ॥ ११ ॥ यतं तित्वा गतं ते
 मो कगता सय ते सिलय ३०३ मसिय द्वा गौ त ते मो विदिमा मक ॥ १२ ॥ गा मा
 वरण वतु ता नि नान याम्ण द मो कसा ॥ १३ ॥ मि नो च म्पीः स वः सो मो तु
 त्वान सा क्क ॥ १४ ॥ म दं वै रवान नो तु त्वा पा पि नां ते द मा सितः ॥ १५ ॥ पा पा
 न स मा य कः १५ वा म्णं नं वतु वि न ॥ १६ ॥ स व स्या या दं द लि स ॥ नि वि द्रो म्पतः
 र्म ति क्ति न म पो द नं वा वे नै स स वै न द मो व वै यो वे रांत क वे र वि रे व वा द ॥ १७ ॥ वा वि मो पु तु यो लो

सीमन्तपञ्चमी विपु नरुं नीपोठरा रुनी वरु विरु नाक नाके । सनी स
 दाष्ट तस्य पतन गवाळ ३ सिगा मुति नि विभ पति स्तु ३ ४ सी सना वि
 १ पुनरु ननी चो इरा रुनी वरु विरु नाक नाके सनी प्रसा ३ सि प
 धनी व वरु तै क्का धि क पे वि ति यो ग ४ पे ० द्री ० सी ० पे ० क्ली ० सो ०
 सी ० द्री ० क्ली ० पे ० सो ० सी सना वि पुनरु ननी पोठरा रुनी पे ०

सर्व इरा क्का धि ० सो ० ग ० धि ० पे ० द्री ० सी ० पे ० क्ली ० सो ० ग ० द्री ० सी ०
 सी सना वि पुनरु ननी पोठरा रुनी द्री ० क्ली ० वि त्त त ० ति रो क्का धि ०
 द्री ० त न नी पे ० द्री ० सी ० पे ० क्ली ० सो ० ग ० क ० इ ल द्री ० सी सना वि पु

मुं चामु यथायत्नं तन्नादि वि० न० न्ना सभ मुं स्त्रीं बीनं चामाया
 मलयां कुयत्ति। पुत्रकं मुं तकं नेव सभ तादृकं सभ मुं पुत्रकं
 नमस्वासा निरवासा नाद सासु ना नीव। सभ मुं क। मुं त कं स
 वलियं नेव कं वा मनादि विप्रामाया मेति नुवते।
 सभ भामनं पत्रं पत्रं सभ मुं क ते न नादि सभ कं
 निवि सभ मुं पात्रं सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ
 सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ
 सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ सभ

[illegible]

४२

नष्टा ॥ ३३ ॥ मस्ती ३ मविमे त विष्ठा ति पुनर्न ॥ १०३ ॥ असौ मया दतः रा तु र्ध निष्ठा वा प नान वि
 दी ख नो य म दं तो गी सि यो दं ब ल वा न्दु र्सी ॥ १०४ ॥ आ लो धि क न वा न स्मि को नो सि र्श रो
 म या ॥ य को र
 मो द काल समं
 स ॥ ता वि ताः स्त
 नि पु र्व क ॥ १०५ ॥
 प न रे दे षु प्र वि षं तो त
 र्णा मि मो वि षा ३ त्वा कान वि मो दि ता ॥ १०६ ॥ अ ने क वि त्त वि त्तान्ता
 त्ताः ॥ आ स क्ताः काम तो ने पु प तं
 ब्रा न न मा न मा रा बि ता ॥ य मं ते ना
 म दं का नं ब लं ३ पं का मं को लं ३
 ॥ १०७ ॥ ता न दं वि ष तं क न
 न न के रु यौ ॥ १०८ ॥ आ म
 म या के स्ते नं ते ना वि
 स ॥ सि ता ॥ सा मा त्मा
 ॥ १०९ ॥ म म म म म म

मको लक्ष्मणालो तस्मै नमः ॥ यस्तौ याति पञ्चगतिं ॥ ७७ ॥ यः सास्त्र
लिधि मवाप्नोति नरु स न पञ्चग
सायकावस्थितो । कात्वा सास्त्रे विज्ञानो
द निःश्रुतस्तत्ति सौ मन्मादाता न ते रा
वैष्णवा राकाः सीती श्री पूर्वणि तण व नी ता शु प निव ह्यु प न ब्रह्म वि श्या याः यो न रा स्त्रे सी कृत्ता
न सः वा ३ ३ वा स्य न सः प द्वि ता न यो नो ना म वो ठ रो न्या यः ॥ ५ सी कृत्ता प ता म स्यु ॥ ५

इति सोलत तेषु नम साङ्ग का सोलते वाङ्गं न या छी
वि न या त वे ला इति वि लो पं न र सोलं नं पु पा
॥ भा र ती ॥
वि न का सि वा वि लो न

गां पु वि लो न वि लो न क इति लो नं नं पु पा नं नं नं नं नं नं

मा का रो तु सु र स नि भ त्र मा मा ता स्व तु रि सि वै न ते अ स् व न र
 तु ॥ १ ॥ वि वा नु स तु सु र्थ सु रा तौ न स तु व ॥ २ ॥ मा भ क ले न स तु
 वा ना आ र्थ ले न स तु वा मी न भ ॥ ३ ॥ अ ह का ० ना न रि ० म स् व स
 व त ॥ ४ ॥ पा तु  के रा व भ स व ले मा ले ॥ ५ ॥ व तु त ० वि ॥
 पं न र ० ॥ ६ ॥ वि ॥ ७ ॥ प ० अ न म ० आ र्थ ० ॥ ८ ॥ वि व न म मे
 श्री प ते ॥ ९ ॥  हा ने मा आ प्पो ने स ० का मे रा तु स ० क ॥
 १० ॥ न श्री व त र ॥ ११ ॥ वै वा वा प्प दो न त ये ॥ १२ ॥ आ क नी वे त तु
 ते ॥ १३ ॥ त अ ० ना स्ति क दा व तु ॥ १४ ॥ अ ० लो ल त ते ॥ १५ ॥

अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥
 अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥ अथ च्छास्त्रस्य प्रथमः पादः ॥ दधि दध्नि ॥ ३ ॥



पुं लगी स्थात विष्णु स्ति। वस्ति स्तु त्रु मं कर्कि कोष्ठु तं वे वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 स्ती मा। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 ३३ कृतो मे वे विष्णु स्ति। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 स्तु त्रु मं कर्कि कोष्ठु तं वे वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 ल स्तु स्ति। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।
 स्तु त्रु मं कर्कि कोष्ठु तं वे वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला। वस्ति लापयः विदे ला।

भासिभतेवदसभतेयकं गोवायं सयकं पादिसयकपठिं पादिसि — मां पाद्रीति कचेक
 तसि पविदेकयत्तां समसुमुद्यत्तां इन्नुपः प्रणोवामीति देवे इन्नुत्तुत्तिरः सवदसभतिप्र
 सुतइति कपिदो प्रणयेति कवे ॥ १ ॥
 भायं रतैः प्रहारायेत ॥ १ ॥ अथ
 वचामीति रितुसो इति कृत्तिमं
 पामीति वचं नु अ पविदे इ
 पोमात्तां तां कुं कः प्रोक्तमी
 दमुं वलोमी कः कः नमस्तु यत्ततो लुरा न
 नादं सभतं तु लाम्बति यत्तः
 नी कः लम्बतिः प्रकाल्य स पयं रा कः पयः

२५

नो नु सल मु स न मिर सा ३ ये तये फल पा त म दृ ट्या नं तर्ण तौ वा रे स म्मा वा व व स ३ ३
 पा दि हा ध ण्ण दी दा ता स्मि न्नुं तर्ण पा प सा सि स प दि वा त्ता न्नुं त्तु मु यं पा वा ण्ण ता ना नि
 वि स्य स्य ता तिन हि सि न्नुं प्रो सो द ता
 न क र्त्त र्तां स्य द दो स ण्ण म्मा इति
 न ग्गे नि ना य पा दि ते स्य तर्ण यो
 ३ र्त्ता न्नुं म्मा त्तु स्य ण्ण वा ण्ण पा ३
 यं प्रा य्म स्यो य सो च दी ट्या र म्भ
 प नी ट्या नि त्तु स्यः प रा द सु वि त्तु ७ यो प क नि नि का त्ता न्नुं
 उप स्य स्यो ३ म्मा य म्मा वा वि स्योः स ३ ने स्यो ३ म्मा त्तु ३ य्म स्यु प दि स्यो ३ य स्यो ३ त द्वा स्यो ३ स ३ म्मा

कैली के माहित है ॥ ते पा० ७५ पा० स० स० ल० द० यो ते व० को व० आधो पित नो तु वि० त
 पा० ७५ पा० का० त० ७५ पा० व० पि० नो ७५ को० त० ७५ यो० को० ७५ व० व० ते पा० ७५ पा० यो० को० व० ते त० ७५
 पा० व० ते पित० ७५ नो तु वि० ते स० वे० त० मा० य० ७५ ते त० ७५ पि० ७५ द० द० ७५ म० ७५ ७५
 ७५ व० ७५ पा० यो० ७५ पित० व० ७५ का० ता० मा० त० स० ७५ व० ७५ त० वा० म० दी० य० ७५ व० ७५
 ७५ म० ७५ ७५ द० यो० ७५ रि० म० म० द० स० त० त० त० ७५ स० ७५ वा० रि० त० स० व० का० ७५
 मि० ता० पि० स० स० ७५ प० स० व० स० व० ७५ द० ७५ स० स० स० स० क० तो० प० का० त० ७५ ७५
 ७५ नो० यो० म० म० ७५ य० ता० स० ते० त० ७५ स्व० पा० पि० ७५ म० ७५ द० द० ७५ पि० त० ७५
 ७५ स० स० ७५ त० ७५ स० ७५ व० ७५ ते० ७५ वे० ७५ मा० य० ७५ ते० त० ७५ ७५ ७५ ७५

पनाकित ४५ ५५५ वि स्वमु तिनिदि मु तिनि तमु तिनि मु तिनि ना नाने क मु तिनि का कृ रात मु तिनि राता
 नन १५ को नै क १५ व १ क १ कि १ या त ता १ मु त मा १ लोक व १ थु लोक ना घो मा थ वो त कृ व ह्य ल १ सु व ता वि ता मे
 दे हा १ गो व ना रु स्व १ ना १ ग १ री १ वी न १ का वि ष मा १ सु न्ना १ प्ल ता री न व ल स ल १ का मा नी मा न गो १०
 मा न्ना १ लोक स्वा मी नि लोक थ १ त्ता १ सु मे था मे थ को थ न्ना १ रा ता मे था १ थ ना थ न १ ५ ५५
 ते जो व षो थु ति थ न १ रा व रा स्व त्ता १ व न १ प्र य सो नि य सो का यो नै क रा १ गो ग रा य न १ व तु मु
 ति स्व तु वा रु स्व कृ र्ति स्व तु र्ग ति १ व तु ना त्मा व तु त वि स्व तु र्ग वि र्ग वि र्ग क पा द्वा रा मा व र्ग नि व ता त्मा
 उ र्ग यो उ न १ ति क मा १ उ ल तो उ र्ग मा १ उ गे उ ना वा र्ग यो उ ना वि का १ सु ता १ गो लो क सा न १ ग १ सु त १ तु स १ तु द थ

४५

मद्रवीषताम तां० तु गुनद० निनामस्यदेक मद्रन० याना० कपयको स्थिराव नापा० दिमालय० मद्र
 द्वा० सार्ववृक्षाता० देववी ता० वना० त० ग० य० वृत्ति० विलेन० घ० सि० याना० कपिनो० वि० त्रुवै० सव० स० म० खाना०
 विपिमा मद्रतो तव० पेनावत० ग० के० त्रामा० नना० ता० वनना० धिप० य० ५० ५० ५० मद्रा० याना० मद्र० व
 द्र० थेनुनामस्ति कामयुक्ता० प० न० स्वास्ति० क० ३० ४० स० प० ता० म० स्ति० वा० रु० कि० ४० अन० त० स्वास्ति
 नागाना० वृ० ता० याना० त० स्वास्ति० मद्र० पितृ० ता० म० य० म० वा० स्ति० य० म० स० य० म० ता० म० द्र०
 प्र० द्वा० त० स्वास्ति० तै० तामा० क० क० क० य० ता० म० द्र० म० य० ता० व० म० ने० त्रै० द० दैन० ते० य० स
 प० द्रि० ता० प० व० न० प० व० ता० म० स्ति० ना० म० स० स० त० ता० म० द्र० ता० म० क० न० स्वास्ति० सो० त० रा० म० स्ति० का० म० वी०
 स० ग० ता० म० दि० न० त० स० म० थ० वै० वा० द० म० रु० ना० म० थ० म० दि० या० दि० याना० वा० ३० ५० द० ता० म० द्र० म० द्र० ता०

तामकातोस्मिदं३०३० सामासिकस्य वाच्यं कालोपातादं विखितोऽस्य ॥ १॥
 ननश्चाद्यत्र वस्तुविषयाः कीर्तिः जीवादिना नीताः ॥ स्मृतिर्मेधा न्यतिः कथा
 बुद्ध्यामतघ्ना ॥ सामान्यालंकीकृतं सामान्यं मासा नानां गणितं निरुतां कुशला कन
 श्रुतं कुलजताम ॥ स्मृतेऽस्ते कस्मिन्नामदं कथोऽस्मिन्वावसायोऽस्मिन्वावसा ॥ त्वतामदं
 वृक्षीनां वासुदेवो ॥ स्मृतां उवाचां यनं कथं ॥ कुनीनामदं कासां कवी ॥ नाश्रुतामक
 विः ॥ ११५३० ॥ ३० ॥ यतामस्मिन्नीतिनस्मिन्नीतिगीषतां ॥ ११० न वैवास्मिन्नीति ॥ नां कानं का
 नवतामदं यत्रा ॥ पिरावतुतानां वीकं तं रुद्रा कुनीनतं ॥ विनायस्यान्ना ॥ यातुतं ननाव
 न० नां तोस्मिन्ममिका नां विदुर्मानां पत्रं तपः ॥ ११५३० ॥ ३० ॥ यो कोविदुतेर्विस्तो मलाययदितुतिमह
 त्वं श्रीमदुक्तिमेव वाततरेवो वग कुलं ममाते कोरासातदं ॥ ११५३० ॥ ३० ॥ नैतेन किं सातेन तवा कुनी

कथं दिद्यामदं यो निःस्वां सतापतिवित्तवृत्तं के पुं तावे पुं विन्त्यो सित गवन्मया विस्तनेपात्तनो
 यो गं वितुतिं वरुना नितापुयः कथयतुतिदि रतावतो नास्ति मे मृतं यथसीत गवानु वत्तय ५
 दंतते कथं विष्णुना मिदिकम क्व वितुतयः पाथान्नतः कुतु से मना र्थं तो विस्तन र्थं तो मना र्थं
 तागु न के रा स वितुता सय र्थं तः आद मा दिस्व मथां व तुताना मां तः व वः आदिता
 ना म दं विष्णुना तिषां व विनं रु म्ना न नी विमनुता मस्मिन् रु ता पा ता म दं र
 री वे मनां सा म वेरोस्मि दे वान्म मस्मिन् वा स वः ३० दि या पां म न र्वा स्थितुताना म
 स्मि वेतना उ मा पा रं क न र्वा म्मि विते र्गो ज रु न रु सां व रु नं पा व क स्वा म्मि मे उ र्गो स नि पा
 म दं ७ तो थ सां व रु नं म्मां वि धि ना घ व रु र्ण स्मिं (से ना नी ना म दं रु ३० स न सा म्मि सा ग न ३।

[illegible]

पुण्या किं विहो हते संवमानवश वे स० त गो ब्राह्मण रणात् रुविजो विरु जी त दे त्वा वै रजो च न स
 मय स्या कु ३० सुर सहा वा पुण्यात् य म धी पा पु या य म धी पा धी वा धी म पु या त् का म न रा पु
 या का धी प्र का धी वा पु या त् का धी य म य त कि म नू य ० स ० घाय रु वि स र ग त म न स ० स
 रु स० वा रु ते व र्ण ना स्मा मेत त्वा की र्त्तयेत् य रा ष्वा म्ने ति वि पु न० क्वा ति प्रा य्वा न्ना
 मो व रा षा व ल्ना० सि स म्ना यो ति से य स्वा म्ने त्वा नु त म० न त य० क्व वि द म्ने ति दी र्घ
 ते रु स वि ३ ति त व त्वा नो गो य ति म्ना न् ब ल रु प ग्रा म्ना वि त्ती नो ग तो ह्य ते नो ग त् ब० यो
 म्ने त व० य ना न्ना त या न्ना म्ने त ती त रु म्ने त्वा च० न म्ना प ३ १ ३ ग ति ति त न त्वा रु पु ३ ५ ३ ३

मोरुमः प्रो देव देव देवनः मे सुते । प्र ३३ किता ५५ चकी ना विपराधिने त क्ता त क्ता ती श प्र ३३ अधिने ।
 ना ना या ता य रु न ये न ना ता ॥ पा प ना मि तो न म स्का न ५५ च रु म स्व दे व दे वे रा रु म स्व गु तु पो त मा रु
 म स्व क म ना क  त रु म स्व रु म ना कि रु म पा धि नि ५५ प वा ना य नी ल वु पु वे न व कि ० कि ता म क ०३
 क्षा ना ति ना म क प ना य दि ग ० व ना य रा गु ल दि का न स तु पा ता तु ० वि ता य न ० ना त्मा
 आ य न व नी त ० पे न म स्ते ॥ स म य ता ५५ च व न माली ग डी रा टी रा ० सी व की व न ० ३ की ।
 सी मा ना ना या ता मे वि पु व रि दे वो ति न रु रु ३ ती ३ ० की त नि य स म को स व र स म म ना त्मा न म ना म्मा म्मा
 स रु स ० दि ना ना म रो वे ता प्र की ति ति ॥ य ३ ० र ता य क्षि त्मा ० य सा पि प पि की त ये व ना रु त ० ५५

[illegible]

मनंतं पुंनुषोतमं सुवन्नाम सार सौगा पुंनुषः सततोद्धितः तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय
 यं सुवन्मन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय
 वृत्तः सातिगो तवेत्तु वृत्तमन्त्राय सर्वथ मन्त्रं लोकानां कीर्तिवर्धनं लोकनाथं मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो
 त्वं वृत्तमन्त्राय सर्वथ मन्त्रं लोकानां कीर्तिवर्धनं लोकनाथं मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो
 यो मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो यो मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो यो मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो यो मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो
 पवित्रं यो मन्त्रं गलानां वृत्तमन्त्राय सर्वथ मन्त्रं लोकानां कीर्तिवर्धनं लोकनाथं मन्त्रं त्वत्सर्वतु तवो
 तु तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय
 सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय सयकमानस्तमेव तान्त्रिकं नित्यं तस्मात्पुंनुषमन्त्राय

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

(कालीतु रासाः।
मनदि रासाः)

अथोपासना ॥ अथोपासनाः लभ

॥ श्री अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥
अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥ अथोपासनाः लभ ॥

नामोऽस्तु

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



मदीमनेलियो रव लुकेण्युस्मिता इ तेगुचिभिरिको ठु
 उदिल्लिभनन रनेरिक्कुडा व यलात्ते बे ठ।
 रीमनेलियो रव ४ इतन लु राण्डिल्लि सोलातु
 सुतिका तो रि मदीरुहि लिपिदासरीत्ता कव का नि या रात्ता।
 करो। रसिगु सारिकता माल्लु उल्लेख।
 ४५। एडीउहि रमकुत्त मरालेत्ता
 एडीगर्गि ताग मकुत्त मगन रु व रांनु। व ल्लेत्तु
 एडीगर्गि रु सिया गिल्लिल्लि नेउ रै व विन्न।
 इति ते देवता धर्मे इ रामकृष्ण तु।

॥ श्रीतयेचना सोहनेनलविशु ३ कोठलागुडु।
 श्रीतयेचना ७ श्रीसोहवस्तु सोनगे सोहला सिक्कलविशु।
 कोहनेनीको ३ श्रील्लिचना नगदनेनलविशु कटि दविक्की लू।
 वा नरो। ४ श्रीवस्तुके नल्लिक्के सोहनेतिविशु न. ग ३ कोठलविशु।
 मशतन ल्लिक्के वा गि मशरा सिक्कला दा ३।
 ६ श्रीरुहिरा (जिद) अनेकता ग ३ ल्लु ३। आ ग मा।
 ७ श्रीरुहिरा सुत रल्लितला काथि।
 ८ श्रीगतिगिआ ७ अ ३ ल्लेग ३ म ग न रु ३ ग ल्लु।
 ९ श्रीगतिगि ३ ३ ३ अ ३ दे रु वे ३।

१ शीत गेल मा था न वागल वि य उ। स. वाग वि ल्हा
 २ शीत न बं भन व ना सु स र ल दे बि ड उ।
 ३ शीत न म्हा काल म्हा प वि रु न र उ।
 ४ शी रै व य सो ग डि र वे ले लु वि ते वे ठ।
 शीत गेल मा था म्हा शी वा डि दो न व नु उ त न वि कि न लि रि क्का उ।
 न उ टो ड ल वो। ८ शी व लु व व दे ग लु ते म रि या लु य न लु ग डि ड ल दे वा न ड।
 १४६। ९ शी व लु ना उ वे ठा नै व लु रि नि र ल दे वा न ड।
 १५०। १० शीत न लाल शी ता वि ति री त्ता वि ते वे ठ।
 ११ शी लाल बं शी तु वि ते वे ठ।

शीतलनोग
मादीतोमा
गदो।

१ शीतलनोगदेवनप्राधनित्येवशाद
२ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
३ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
४ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
५ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
६ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
७ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
८ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
९ शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु
१० शीतलनोगदेवताप्राधनित्येवशाथानु

१॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 २॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ३॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ४॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ५॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ६॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ७॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ८॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 ९॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता
 १०॥ इति नल्लि विद्या वागु मत्तो बल्लि या पीत्ता

ततमः एतच्चाना ज्ञातृत्वात् ततो नैतन्मस्त्वं इमुं मुमुक्षुं तेनमाश्रयन्तुः ॥ अथ लोपेताः
 ययुनात्तु चतायथा ॥ १५५ ॥ स्तौततो नैकीमीवयास्याववस्थिता ॥ स्ति
 दस्तेनोपनिरोले ॥ ३ ॥ रागे मज्जति काव्ये ॥ १५६ ॥ स्तौततो नैकीमीवयास्याववस्थिता ॥ स्ति
 अमं वकु उद्यता ॥ १५७ ॥ आकृष्टं सवापासि यनास्त घातयेत स्तुमीप
 गाः ॥ १५८ ॥ ततः कोप ॥ १५९ ॥ वकौ सो द्वैतं विकाता नवीन्यति कोपेन राणा
 द ॥ १६० ॥ मंजीवममत्तु ॥ १६१ ॥ तया ॥ अत्र कुटी कुटिलात्तु स्थापनत्वात् अलका
 ॥ १६२ ॥ आनीकरान्नेवक्ता ॥ ता विबिक्ता ॥ तासि पाणिनी ॥ १६३ ॥ विविक्त सत्तु ॥ गथरा ननमाला
 विभुषणा ॥ द्विपिबर्मपनी ॥ यानासुक्क मास्याति तेन वीणा ॥ १६४ ॥ कं गा य के रो ॥ १६५ ॥ वा
 यामघवापनं ॥ १६६ ॥ वा नैवो नाकम्यैवान्ना मुने स्तान्ने मपो घमत्तु ॥ १६७ ॥

के सन ११७५ सितामनत हलं २००० रुयं नीतं मद्रात्मना तेन के सन सितामने वा दादने
 नातिकोपिना १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००
 देवी के सन सितामनत १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००
 १५
 माया वया माया वया
 रुजिः पवित्रातिता १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००
 वाक्यमात्रा वाक्यमात्रा
 विजि रुजिमात्रा १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००
 पुमापमात्रा १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००
 सादृष्टिके मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १००० रुयं वातु मद्रात्मने वा निरुतं १०००

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उत्पन्नं कर्तुं त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं
नानां त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं
नानां त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं त्रितयैस्संज्ञोऽत्रागाधयन्त्रावित्ताविलेखनं

॥३॥

॥३॥

॥३॥

॥३॥



